रॉबर्ट वैनॉय , प्रमुख भविष्यवक्ता, व्याख्यान 7

यशायाह 8:11-10:32

यशायाह 8:11-9:3 यशायाह 8:11-22 इस्राएलियों को उपदेश

हम यशायाह के अध्याय 8 के अंत में "आयत 11-22 में इस्राएलियों को उपदेश" को देख रहे हैं। अध्याय 8, श्लोक 21, और 9:2 और 3 के बीच, आप जिसे आप उदासी कह सकते हैं, उससे आनंद और आनंद की ओर परिवर्तन पाएंगे। 8:21 में तुम पढ़ते हो, "वे उस में से बड़े संकट में और भूखे होकर निकलेंगे; और ऐसा होगा कि जब उन्हें भूख लगेगी तो वे घबराएंगे, अपने राजा और अपने परमेश्वर को शाप देंगे, और ऊपर की ओर देखेंगे। वे पृथ्वी की ओर दृष्टि करके देखेंगे, संकट और अन्धकार, और पीड़ा का धुंधलापन। उन्हें अँधेरे में ले जाया जाएगा।"

आनंद को कष्ट अध्याय विभाजन ख़राब स्थिति में है। वास्तव में, 8:22 बिना किसी रुकावट के सीधे 9:1 पर जाता है - " फिर भी, धुंधलापन वैसा नहीं होगा जैसा उसकी झुंझलाहट में था, जब पहले, उसने जबूलून की भूमि और नप्ताली की भूमि को हल्के से पीड़ित किया, और उसके बाद और अन्यजातियों के यरदन और गलील के पार समुद्र के मार्ग में उसे और भी अधिक दु:ख दिया। जो लोग अन्धकार में चल रहे थे उन्होंने बड़ी रोशनी देखी थी! जो लोग छाया की मृत्यु की भूमि में रहते हैं, उन पर प्रकाश चमका है। आपने राष्ट्र को बढ़ाया है, आनंद बढ़ाया है। उन्होंने तेरे साम्हने कटनी के समय का ऐसा आनन्द किया, जैसा मनुष्य लूट बाँटने के समय आनन्दित होते हैं। तो आप देखिए, आप 8:21 से नीचे 9:3 तक चले जाते हैं, अंधकार और उदासी और संकट से खुशी और आनंद और महान प्रकाश की ओर।

ऐतिहासिक सन्दर्भ 2 राजा 15:29-30 अध्याय 9 के श्लोक 1 में उल्लिखित क्षेत्र, जबूलून और नेप्ताली, उत्तरी फ़िलिस्तीन का क्षेत्र है जहाँ असीरियन सेना पहली बार इज़राइल की भूमि में आई थी। यदि आप 2 राजाओं 15 पर वापस जाते हैं, तो आप पद 29 में पढ़ते हैं, "

इस्राएल के राजा पेकह के दिनों में , अश्शूर का राजा तिग्लत्पिलेसेर आया, और इयोन , और हाबिल, बेतमा , और जानोह , और केदेश को ले गया। " , और हज़ोर। उसने गिलाद, गलील, और नप्ताली का सारा देश ले लिया, और उन्हें अश्शूर में ले गया।" तो आप देख सकते हैं कि यह उत्तरी साम्राज्य का वह उत्तरी क्षेत्र है जिस पर शुरू में टिग्लाथ-पिलेसर ने आक्रमण किया था।

वह 2 राजा 15:29 है जहाँ आप देखते हैं कि यह पेकह के दिनों में है । और फिर आप श्लोक 30 में पढ़ते हैं, " एला के पुत्र होशे ने रमल्याह के पुत्र पेकह के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा , और उसे मारकर घात किया और उसके स्थान पर राज्य करने लगा।" वह अंतिम राजाओं का परिवर्तन है। दमिश्क पर 732 ईसा पूर्व में कब्ज़ा कर लिया गया था, जो सिरो -एफ्रैमाइट युद्ध (734 ईसा पूर्व) के कुछ साल बाद हुआ था । लेकिन उत्तरी साम्राज्य के बारे में क्या? पेकह से होशे तक का वह संक्रमण भी 732 ईसा पूर्व में हुआ था लेकिन असीरियन इसराइल के उत्तरी भाग में उसी क्षेत्र में आ गए।

यशायाह 9:2-3 - इम्मानुएल का आगमन लेकिन अध्याय 9 के पद 2 में आपने जो पढ़ा है वह यह है कि जो लोग अंधकार में चले हैं उन्होंने एक बड़ी रोशनी देखी है और पद 3 में खुशी और आनन्द की बात करते हैं। मुझे लगता है, संदर्भ में, आपका यह निष्कर्ष निकालना उचित होगा कि इस आने वाली खुशी और इमैनुएल के आने के बीच कुछ संबंध होना चाहिए, जिसकी भविष्यवाणी अध्याय 7 में की गई थी। इमैनुएल ही वह व्यक्ति था, जो दाऊद के सिंहासन पर आहाज की जगह लेने वाला था। जब आप नए नियम की ओर मुड़ते हैं, तो आप पाते हैं कि यीशु ने अपना सार्वजनिक मंत्रालय गलील में उसी क्षेत्र में शुरू किया था जिसका यहाँ वर्णन किया गया है। मैथ्यू 4:13-16 कहता है, "नासरत को छोड़ने के बाद, वह कफरनहूम में आया, जो जबूलून और नेप्ताली की सीमाओं पर समुद्र तट पर है।" और फिर पद 14 कहता है, "ताकि जो यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो, 'जबूलून और नप्ताली का देश, समुद्र के मार्ग से, यरदन के पार, अन्यजातियों का गलील: जो लोग अन्धकार में बैठे थे, उन्होंने बड़ी ज्योति देखी; और जो लोग मृत्यु के क्षेत्र और छाया में

बैठे थे, उनके लिये ज्योति चमकी,' ' यशायाह 9:1-2 की ओर संकेत करते हुए।

श्लोक 3 में उस दिन लोगों की खुशी का वर्णन किया गया है: “तू ने जाति को बढ़ाया, और आनन्द बढ़ाया है। उन्होंने तेरे साम्हने कटनी के समय का वैसा आनन्द किया जैसा मनुष्य लूट बाँटने के समय आनन्द करते हैं। अब मुझे लगता है कि यह एक भविष्यवाणी थी जिसका उपयोग मैंने पिछली तिमाही में बाइबिल की भविष्यवाणी के रहस्यमय चरित्र को दिखाने में किया था। यदि आपने अभी इस भविष्यवाणी को पढ़ा है, यदि आपके पास इसका नए नियम का संदर्भ नहीं है, तो आप आश्चर्यचकित हो सकते हैं, "यहाँ किस बारे में बात की जा रही है?" जब आप नए नियम की पूर्ति देखते हैं, तो आप स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि यह उस ऐतिहासिक स्थिति, अश्शूर के आगमन और फिर अंततः मसीह के आगमन के संबंध में आने वाले आनंद और प्रकाश से कैसे संबंधित है।

यशायाह 9:3 में आनन्द क्यों? 3 कारण लेकिन पद 3 में आनंद क्यों? ठीक है, जब आप श्लोक 4, 5, और 6 में आगे बढ़ते हैं तो तीन कारण दिए जाते हैं। तीनों कारणों को हिब्रू शब्द *की*"फॉर" द्वारा प्रस्तुत किया गया है। आप देखते हैं, श्लोक 4 में, आपके पास है, "क्योंकि - *तुमने* उसके बोझ का जूआ और उसके कंधे की लाठी, उसके उत्पीड़क की छड़ी को तोड़ दिया है, जैसा कि मिद्यान के दिन में हुआ था।" श्लोक 5, " *क्योंकि* योद्धा का हर युद्ध भ्रान्त शोर और लोहू में लिपटे हुए वस्त्रों के साथ होता है, परन्तु यह जलन और आग के ईंधन के साथ होगा।" और फिर पद 6, “ *क्योंकि* हमारे लिये एक बच्चा उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और सरकार उसके कंधों पर होगी. उसका नाम अद्भुत, परामर्शदाता, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्त पिता, शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।” चरमोत्कर्ष निश्चित रूप से श्लोक 6 में है, "क्योंकि हमारे लिए एक बच्चा जन्मा है, हमें एक पुत्र दिया गया है।" यहां दिलचस्प बात यह है कि हिब्रू में दोनों क्रियाओं के साथ पूर्ण काल का उपयोग किया जाता है। वहां क्रियाएं *युलद हैं:* आपने पुअल को सही पाया है, "हमारे लिए एक बच्चा *पैदा हुआ है* और हमारे लिए बेटा पैदा हुआ है दिया गया *है*”-नतान से , *एक* पूर्ण काल। ये भविष्यसूचक सिद्धताएं हैं, जहां भविष्यवक्ता इसे देखता है, और पूर्ति के बारे में इतना

निश्चित है कि वह इसके बारे में ऐसे बोलता है जैसे कि यह पहले ही हो चुका हो। अनुवादित होने के बावजूद, आप निश्चित रूप से इसे भविष्य में रख सकते हैं। एनआईवी इसे वर्तमान में रखता है, "क्योंकि हमारे लिए एक बच्चा पैदा हुआ है, हमें बेटा दिया गया है।"

तो चरमोत्कर्ष श्लोक 6 के साथ है, और फिर, आप एक मसीहाई भविष्यवाणी में हैं, यशायाह 7:14 की तरह। यंग कहते हैं, "भगवान के लोगों के बीच बहुत खुशी है क्योंकि भगवान ने बोझ और उत्पीड़न के जुए को तोड़ दिया है, और बोझ और उत्पीड़न हटा दिया गया है क्योंकि योद्धा के हथियार और वस्त्र नष्ट हो गए हैं , और इन आशीर्वादों का मूल कारण यह है कि एक बच्चा पैदा हुआ है. अश्शूर के शक्तिशाली शत्रु और सिरो -एप्रैमाइट गठबंधन के विपरीत , एक बच्चा ईश्वर के लोगों को मुक्ति दिलाता है।

जब आप पद 6 में उस बच्चे को दिए गए नामों को देखते हैं, तो निश्चित रूप से वे ऐसे नाम नहीं हैं जो किसी सामान्य इंसान पर लागू होंगे। मैं यहां इमैनुएल से भी अधिक स्पष्ट रूप से सोचता हूं, जहां आपके पास एक ऐसा नाम है जिसका अर्थ देवता है। यशायाह 7:14 में आपके पास है, "कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी," जहां इम्मानुएल नाम - भगवान हमारे साथ है - का अर्थ देवता है। यहाँ 9:6 में आपको यह शिक्षा मिलती है कि यह बच्चा "शक्तिशाली ईश्वर, अनन्त पिता" *है* / लेकिन मानव रूप में. तो आप यहां पवित्रशास्त्र की महान शिक्षाओं में से एक का सामना करते हैं: कि भगवान अपने पुत्र के रूप में मानव रूप में आएंगे।

विद्यार्थी प्रश्न: श्लोक 4 और 5 में , क्या यही कारण है कि पिता का हिब्रू दृष्टिकोण यह है कि वह जाएगा और बेबीलोन का जूआ तोड़ देगा?

वन्नॉय का उत्तर: संभवतः; निश्चित रूप से आप इसे उस तरह से पढ़ सकते हैं, और यदि इसे इस तरह से पढ़ा जाए तो यह समझ में आएगा। श्लोक 4 और 5 को वास्तव में कैसे लें, आप शाब्दिक बनाम आलंकारिक के इस प्रश्न पर वापस आते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि इस संदर्भ में यह संभव है। हालाँकि यह स्पष्ट नहीं हो सकता है, मैं इसे इस तरह से सोचने के लिए इच्छुक हूँ, हालाँकि जे. बार्टन पायने जैसा कोई व्यक्ति इसे दूसरे आगमन और आर्मागेडन के रूप में लेता है। बिल्कुल शाब्दिक अर्थ में आप कह सकते हैं कि यह भी

संभव है। लेकिन तब यह प्रवाह के अनुकूल नहीं लगता। ऐसा लगता है कि प्रवाह पिछले अध्याय के अंत में असीरियन उत्पीड़न से अध्याय 9 के पहले श्लोक में ईसा मसीह के पहले आगमन पर आता है, जो खुशी लाता है। और यदि ऐसा मामला है, तो ऐसा लगता है कि आपको श्लोक 4 और 5 को पाप के उत्पीड़न के प्रतीक के रूप में लेना होगा। लेकिन मैं इसे आलंकारिक रूप में लेने का इच्छुक हूँ क्योंकि इसका प्रवाह श्लोक 3 से 6 तक चल रहा है, और वह इसे आलंकारिक रूप में लेने के लिए बीच में है।

असली आशा इस व्यक्ति के आने में है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि सांत्वना देने वाले शब्दों को भी बाहर रखा जाए जो तत्काल स्थिति पर लागू होते हैं, जिसमें कहा गया है कि सीरिया और उत्तरी साम्राज्य द्वारा यहूदा के खिलाफ यह हमला सफल नहीं होगा। लेकिन वह आनंद का अंतिम आधार नहीं है; यह लंबी अवधि है, बच्चे का आगमन। यशायाह 9:7 दाऊद का शासन

अध्याय 9, श्लोक 7, कहता है, “उसकी सरकार की वृद्धि और शांति का कोई अंत नहीं होगा। वह दाऊद के सिंहासन पर और उसके राज्य पर शासन करेगा, उसे व्यवस्थित करेगा, उसे न्याय के साथ, धार्मिकता के साथ स्थापित करेगा, अब से लेकर हमेशा तक। सेनाओं के यहोवा का उत्साह ऐसा करेगा।” यदि आप 7:13 पर वापस जाएँ, "हे दाऊद के घराने, अब सुनो।" आहाज दाऊद के घराने का एक अयोग्य प्रतिनिधि था जबकि यहाँ अध्याय 9 में यह बच्चा दाऊद के सिंहासन पर बैठकर शांति, न्याय और धार्मिकता स्थापित करने जा रहा है। उनकी सरकार युद्ध, दुख, अन्याय और बुराई का अंत करेगी। यह मानवीय उपलब्धि का परिणाम नहीं है। क्योंकि अंतिम वाक्यांश बताता है, "सेनाओं के प्रभु का उत्साह इसे पूरा करेगा।"

इसका सहस्राब्दी से क्या संबंध है? अब, फिर से, आपको यह प्रश्न मिलता है कि "इसका सहस्राब्दी से क्या संबंध है?" यदि आप अपने उद्धरण को देखते हैं, तो पृष्ठ 18, पहला पैराग्राफ जो पृष्ठ 343 से लिया गया है - यंग कहते हैं, "वह व्याख्या" (वह यहां अध्याय 9 के छंद 7 के बारे में बोल रहे हैं) "वह व्याख्या, जो इस भविष्यवाणी को लागू करेगी सहस्राब्दी

के दौरान यरूशलेम में स्थापित होने वाले डेविड के शाब्दिक सिंहासन को निम्नलिखित कारणों से अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए: शासन की शुरुआत *युलाद*, बच्चे के जन्म से होती है। वह दाऊद के सिंहासन पर विराजमान है और अनन्तकाल तक राज्य करता रहेगा। इस शासन को 1000 वर्षों की अवधि तक सीमित करना 'कोई अंत नहीं है' शब्दों की उपेक्षा करना है। वास्तव में यह कहता है, "उसकी सरकार की वृद्धि और शांति का कोई अंत नहीं होगा।" यंग आगे कहते हैं, "और शुरुआत को सहस्राब्दी की शुरुआत के साथ मेल कराना इस तथ्य को नजरअंदाज करना है कि इसकी शुरुआत बच्चे के जन्म से होती है।"

अब, कुछ लोग यंग की व्याख्या पर टिप्पणी करते हैं। आपने श्लोक 7 में पढ़ा कि "उसकी सरकार की वृद्धि का कोई अंत नहीं होगा", और फिर आप वाक्यांश पढ़ते हैं कि "यह अब से और हमेशा के लिए न्याय और धार्मिकता के साथ स्थापित किया जाएगा।" आपके पास दो वाक्यांश हैं: "कोई अंत नहीं होगा" और "अब से और हमेशा के लिए।" मुझे यकीन नहीं है कि ये वाक्यांश आवश्यक रूप से एक सहस्राब्दी व्याख्या को बाहर करते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि ईसा मसीह का राज्य उनके प्रथम आगमन पर स्थापित हुआ था, और यही दूसरी बात है जिसे यंग कहते हैं। शासन की शुरुआत "बच्चे" या *युलाद* के जन्म से होती है ।

हाँ, मुझे लगता है कि ईसा मसीह का शासनकाल ईसा के प्रथम आगमन के साथ शुरू हुआ। लेकिन प्रथम आगमन के समय उसके राज्य को उसकी पूर्णता का एहसास नहीं हुआ था और न ही अभी तक हुआ है। हम पहले से ही उसमें हैं, लेकिन अभी तक नहीं, इस तरह की स्थिति, यह यहां है, लेकिन यह यहां अपनी पूर्णता या संपूर्णता में नहीं है। जब मसीह वापस आएगा, तो राज्य अधिक पूर्ण रूप में आएगा। इसे नष्ट करने का शैतान का प्रयास, जैसा कि हमें प्रकाशितवाक्य 20 में बताया गया है, विफल हो जाएगा। मसीह का राज्य अविनाशी है. अंततः, हमें 1 कुरिन्थियों 15:24 में बताया गया है, "मसीह राज्य को पिता को सौंपता है और यह सदैव बना रहता है।" इसलिए मुझे ऐसा नहीं लगता कि यदि आप कहते हैं कि सहस्राब्दी जैसी कोई चीज़ है, तो आप या तो इनकार कर रहे हैं, नंबर एक, कि राज्य का कोई वर्तमान पहलू है, या नंबर दो, कोई भविष्य नहीं है सहस्राब्दी से भी आगे

राज्य का पहलू। आप इनमें से किसी भी चीज़ से इनकार नहीं कर रहे हैं, जिस तरह से यंग कह रहा है कि आपको ऐसा करना चाहिए, यदि आपका दृष्टिकोण है कि सहस्राब्दी जैसी कोई चीज़ होती है। मुझे नहीं लगता कि ईसा मसीह का शासन सहस्राब्दि काल तक सीमित है। लेकिन मुझे लगता है कि सहस्राब्दी काल में, आपके पास उसके शासन की अभिव्यक्ति है। यह वर्तमान अभिव्यक्ति से भिन्न क्रम का है।

"कोई अंत नहीं" का संदर्भ उनकी सरकार को संदर्भित करता है। "उनकी सरकार और शांति की इस वृद्धि का कोई अंत नहीं होगा।" मैं उन चीज़ों को बहुत अधिक विशिष्ट बनाने की कोशिश नहीं करूँगा। यह जो कह रहा है वह यह है कि उसका शासन और उसका शांतिपूर्ण राज्य कुछ ऐसा है जो हमेशा जारी रहेगा।

यशायाह 9:8-10:4 - कविता के 4 छंद प्रत्येक का अंत "उसके क्रोध..." के साथ होता है

यशायाह 9:7 के बाद, एक तीव्र विराम है। अध्याय 8 और 9 के बीच जहां अध्याय विभाजन है, उसके बजाय यहां वह जगह है जहां अध्याय विभाजन होना चाहिए। श्लोक 7 के बाद एक तीव्र विराम है, और फिर 9:8 से 10:4 तक अगली इकाई है। तो आप देखते हैं कि 9 और 10 के बीच अध्याय का विभाजन भी ग़लत है। यशायाह 9:8 से 10:4 अगली इकाई है। जो चीज़ इसे एक साथ बांधती है वह कविता के चार छंद हैं, प्रत्येक का अंत एक ही खंड के साथ होता है जो आपको श्लोक 12 के अंत में, श्लोक 17 के अंत में, श्लोक 21 के अंत में, और अध्याय 10 के अंत में, श्लोक 4 में मिलता है। श्लोक 12 के अंत में आप पढ़ते हैं, "इस सब के बाद भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ, परन्तु उसका हाथ अब भी बढ़ा हुआ है," और फिर श्लोक 17 में, "इस सब के बाद भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ, परन्तु उसका हाथ बढ़ा हुआ है।" अभी भी फैला हुआ है।" श्लोक 21 का अंत, "इस सब के बाद भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ, परन्तु उसका हाथ अब भी बढ़ा हुआ है," और फिर 10:4, "इस सब के बाद भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ, परन्तु उसका हाथ अब भी बढ़ा हुआ है" ।"

उस वाक्यांश का विचार यह है कि आपके पास जो कुछ है वह इज़राइल के पाप

और गर्व की निंदा है और एक घोषणा है कि प्रभु इसके लिए उत्तरी साम्राज्य पर भयानक दंड लाएंगे। दूसरे शब्दों में, यह ईश्वर के निर्णय की कविता है। तो, यह उस वाक्यांश में समाहित है। यहोवा ने कुछ ऐसे कार्य किए हैं जिनके कारण इस्राएलियों को पश्चाताप करना चाहिए था, और पीछे लौटना चाहिए था, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। तो यह कहता है कि इस सब के बाद भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ, परन्तु उसका हाथ अब भी बढ़ा हुआ है। फैसला अभी भी आ रहा है. तो हमारे पास उस खंड के साथ समाप्त होने वाले चार छंद हैं जो दर्शाते हैं कि यह पाप के लिए फटकार की कविता है, आने वाले फैसले की घोषणा है। मैं उस अनुभाग की विशिष्टताओं पर ध्यान नहीं देने जा रहा हूँ।

यशायाह 10:5 - न्याय/सांत्वना चक्र अश्शूर को भगवान के साधन के रूप में रास्ता देते हैं

आइए अध्याय 10 के श्लोक 5 से शुरू होने वाले अगले खंड पर चलते हैं। इस बिंदु तक, यशायाह की पुस्तक में दो विषयों पर जोर दिया गया है। दो विषय मूल रूप से ये हैं: इज़राइल को उसके पाप और ईश्वर के खिलाफ विद्रोह के लिए फटकार और आने वाले न्याय की घोषणा है; और फिर उन लोगों के लिए सांत्वना और आराम है जो प्रभु की ओर मुड़ गए हैं, यह आश्वासन देते हुए कि अंत में ईश्वरीय अवशेष के लिए आशीर्वाद है। वे विचार की दो पंक्तियाँ हैं जिन पर यशायाह ने अब तक जोर दिया है। जब आप इम्मानुएल की पुस्तक, अध्याय 7-12 में हैं, तो हमने देखा है कि पहले अध्याय (1-6) में आपके पास निर्णय-आशीर्वाद, निर्णय-आशीर्वाद और निर्णय-आशीर्वाद था। जब आप इम्मानुएल की पुस्तक पर पहुँचते हैं, तो फटकार के उन विषयों में से पहला अश्शूर के साथ आहाज़ के गठबंधन और उससे क्या होगा, के इर्द-गिर्द केंद्रित होता है। दूसरा विषय, सांत्वना, बच्चे इम्मानुएल के आगमन और ईश्वरीय अवशेष के लिए आशीर्वाद पर केंद्रित है।

जब आप 10:5 पर पहुँचते हैं और उसके बाद, आपके सामने एक नया विचार प्रस्तुत होता है। और उस विचार पर उन अन्य दो विषयों के साथ चर्चा की गई है जिन पर पहले जोर दिया गया था। नया विचार दुष्ट राष्ट्र, असीरिया और प्रभु के उद्देश्यों के संबंध से संबंधित है। आपने देखा कि 10:5 का समय हम जो देख रहे थे उससे कुछ बाद का है क्योंकि आपने

श्लोक 9 में पढ़ा है, "क्या कैलनो कार्केमिश की तरह नहीं है? क्या हमात अर्पाद के समान नहीं है? क्या सामरिया दमिश्क के समान नहीं है?" ऐसा लगता है जैसे सामरिया पहले ही गिर चुका है। तो ऐसा लगता है कि यह द बुक ऑफ इम्मानुएल के पहले खंड की तुलना में बाद में लिखा गया था। श्लोक 11 को देखें जहां आप पढ़ते हैं (अश्शूर का राजा बोल रहा है), "जैसा मैंने सामरिया और उसकी मूर्तियों के साथ किया है, क्या मैं भी यरूशलेम और उसकी मूर्तियों के साथ वैसा ही न करूं।" अश्शूर का राजा कह रहा है, "देख, मैं सामरिया को ले चुका हूं; अब मैं यरूशलेम को भी ले लूँगा।" अत: सामरिया पहले ही गिर चुका था।

यशायाह ऐसे समय में रहता था जब ऐसा प्रतीत होता था कि बुराई विजयी थी। असीरिया दुनिया के अब तक ज्ञात सबसे क्रूर और दुष्ट हमलावरों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है। असीरियन अपनी क्रूरता, निर्दयता और अन्य लोगों में पैदा किए गए आतंक के लिए जाने जाते थे। एक लेखक असीरिया के बारे में कहता है, "असीरिया के लोगों से अधिक घृणित कोई भी लोग कभी नहीं थे, कोई भी संप्रभु कभी भी अधिक निरंकुश, अधिक लोभी, अधिक प्रतिशोधी, अधिक निर्दयी, अपने अपराधों पर अधिक गर्व करने वाला नहीं था । अश्शूर अपने आप में सभी बुराइयों का सार प्रस्तुत करता है। बहादुरी के अलावा, यह कोई एक गुण प्रदान नहीं करता है। किसी को दुनिया के पूरे इतिहास में यहां-वहां सबसे संकटपूर्ण दौर में सार्वजनिक अपराधों की तलाश करनी चाहिए, जिनकी भयावहता की तुलना नीनवे के लोगों द्वारा उनके भगवान के नाम पर की गई भयावहता से की जा सकती है। एक असीरियन कलाकार नहीं है, साहित्य का आदमी नहीं है, कानून बनाने वाला नहीं है, वह एक परजीवी है जो लूट के अपने संगठन और एक दुर्जेय सैन्य शक्ति का सामना कर रहा है।

असीरियन एक क्रूर लोग थे। और फिर भी, वे सफल रहे; वे एक के बाद एक शहर ले जा रहे थे। यशायाह असीरियन को आगे बढ़ते और सफल होते देखने के संदर्भ में जी रहा है। तो, अध्याय 10, श्लोक 5 और 6, "हे अश्शूर, मेरे क्रोध की छड़ी और लाठी जिसके हाथ में मेरा क्रोध है! मैं उसे एक कपटी जाति के विरुद्ध भेजूंगा, और अपने क्रोध की प्रजा के विरुद्ध उसे आज्ञा दूंगा ।" फिर महेरशलाल - हज़-बाज़ नाम पर यह नाटक है - " लूट लेना,

शिकार लेना, उन्हें सड़कों की कीचड़ की तरह रौंदना।" इसलिए, प्रभु यशायाह से कहते हैं कि असीरियन पापी इस्राएल को दंडित करने के लिए भगवान के हाथों में एक उपकरण है। “हे असीरियन, मेरे क्रोध की छड़ी।” श्लोक 6, "मैं उसे भेजूंगा।" प्रभु ने उसे भेजा। अब आप परमेश्वर के उद्देश्यों के पक्ष से देखते हैं, अश्शूर अपने ही लोगों पर न्याय लाने के लिए उसके हाथों में एक उपकरण है।

अध्याय 10, श्लोक 7-14 में, आप इसका दूसरा पक्ष देखते हैं। आप अश्शूर का रवैया देखिए, वह अपने बारे में कैसा सोचती थी। श्लोक 7 कहता है, “ऐसा क्यों न हो, उसका ऐसा मतलब नहीं है, न उसका हृदय ऐसा सोचता है; परन्तु उसके मन में कुछ को नहीं, परन्तु राष्ट्रों को नष्ट करना और काट डालना है। क्योंकि वह कहता है, क्या मेरे हाकिम राजा नहीं हैं? क्या कैलनो कार्केमिश की तरह नहीं है ? क्या हमात अर्पाद के समान नहीं है? क्या सामरिया दमिश्क के समान नहीं है? जैसे मेरे हाथ ने यरूशलेम और सामरिया की मूरतों और उनकी खुदी हुई मूरतों के साम्राज्य को ढूंढ़ निकाला है, वैसे ही क्या मैं सामरिया और उसकी मूरतों के साथ वैसा ही न करूं, जैसा यरूशलेम और उसकी मूरतों के साथ करूं? इसलिये ऐसा होगा कि जब यहोवा सिय्योन पर्वत पर और यरूशलेम पर अपना सारा काम कर लेगा, तब मैं अश्शूर के राजा के कठोर हृदय का फल और उसकी ऊंची दृष्टि का फल दण्ड दूंगा।' क्योंकि वह कहता है, 'अपने हाथ के बल से मैं ने यह किया है," (यहां सभी "मैं" और " मेरे " पर ध्यान दें)। “मैं ने यह काम *अपने हाथ* के बल से, और *अपनी* बुद्धि से किया है, क्योंकि *मैं* समझदार हूं; और *मैं* ने प्रजा की सीमा को दूर कर दिया है, और उनका धन लूट लिया है, और शूरवीर की नाईं *मैं ने उसके निवासियोंको नीचे गिरा दिया है।* और *मेरे* हाथ ने देश देश के लोगों की सम्पत्ति घोंसले की नाईं पाई है, और जैसे कोई बचे हुए अण्डों को बटोरता है, वैसे ही *मैं ने* सारी पृथ्वी को भी बटोर लिया है; और कोई न था जो पंख हिलाता, या मुँह खोलता, या झाँकता।” इसलिए, असीरिया की ओर से, ईश्वर की संप्रभुता के प्रति सचेत होने और ईश्वर के हाथ में एक उपकरण होने के बजाय, असीरिया खुद को संप्रभु, सर्वशक्तिमान के रूप में देखती है। स्थिति यह है कि अश्शूर अनजाने में और ईश्वर के अधीन होने के प्रति अचेतन है। **छंद 7-11 में आपके पास उन स्थानों की सूची है जो**

यशायाह के समय में गिरे स्थानों का उल्लेख करते हैं : कैलनो , "क्या कैल्नो कारकेमिश की तरह नहीं है?" जो 738 ईसा पूर्व में गिरा "क्या हमात अर्पाद के समान नहीं है?" 720 ईसा पूर्व में हमात का पतन हुआ। सामरिया, 722 ईसा पूर्व "क्या सामरिया दमिश्क जैसा नहीं है?" दमिश्क 732 ईसा पूर्व में गिर गया, तो आप देख सकते हैं कि आपके पास इस सामान्य समय सीमा में उन स्थानों की एक सूची है जिन पर असीरिया ने कब्जा कर लिया था।

इसलिए, भले ही असीरियन भगवान के हाथ में एक उपकरण है, भगवान कहते हैं कि असीरिया को दंडित किया जाएगा। हम पद 12 में पढ़ते हैं, "इसलिये जब यहोवा सिय्योन पर्वत और यरूशलेम पर अपना सारा कार्य कर चुका होगा, तब मैं अश्शूर के राजा के कठोर हृदय को दण्ड दूंगा, क्योंकि उसने कहा, 'बल से। मेरे हाथ का।'" भले ही असीरियन भगवान के हाथों में एक उपकरण है, असीरिया को उसके किए के लिए दंडित किया जाएगा क्योंकि उसने इसे घमंड में और अपने दुष्ट दिल से किया है। अश्शूर ने परमेश्वर की महिमा को कोई भी मान्यता देने से इनकार कर दिया। और इसलिए, वह स्वयं भगवान की सजा के लिए उत्तरदायी होगी।

यशायाह 10:15 - शेखी बघारने वाली कुल्हाड़ी का रूपक [असीरिया] श्लोक 15 की कल्पना सुंदर है। जब आप देखते हैं कि यह स्थिति पर कैसे लागू होता है, तो इसकी बेतुकीता के कारण आप लगभग मुस्कुराने लगते हैं। पद 15, "क्या कुल्हाड़ी उस पर घमण्ड करेगी जो उस से काटता है? या आरी अपने हिलानेवाले के विरूद्ध बड़ाई करेगी? मानो छड़ी अपने आप को उठाने वालों के विरुद्ध हिल जाए, या मानो लाठी अपने आप ऊपर उठ जाए, मानो वह लकड़ी न हो!" असीरिया बिल्कुल यही कर रहा था। अश्शूर यहोवा के हाथ में एक छड़ी थी। "क्या कुल्हाड़ी उस पर घमण्ड करे जो उस से काटता है?" असीरिया बिल्कुल यही कर रहा था। क्या साधन अपने आप को उस व्यक्ति के विरुद्ध बड़ा करेगा जो उसे धारण करता है? निःसंदेह, उत्तर है "नहीं, यह बेतुका है।"

यशायाह 1-16-19 - अश्शूर के विनाश की वन छवि परिणाम श्लोक 16-19 में है। और 16-

19 में आपके पास जो है वह जंगल की तस्वीर के नीचे है। यशायाह उस दंड और विनाश को दर्शाता है जो असीरियन साम्राज्य को दिया जाएगा। वह जंगल कटने वाला है. पद 16, “इस कारण सेनाओं का यहोवा, उसके मोटे लोगों में दुबलापन भेज देगा; और वह अपनी महिमा के नीचे आग के समान जलन भड़काएगा। और इस्राएल की ज्योति आग और उसका पवित्र परमेश्वर लौ ठहरेगा; और वह एक ही दिन में उसके कांटों और झाड़ियों को जलाकर भस्म कर देगा, और उसके जंगल और फलदायक खेत की शोभा को, वरन प्राण और शरीर दोनों को भस्म कर डालेगा; और वे ध्वजवाहक के मूर्छित हो जाने के समान होंगे। और उसके जंगल के बाकी पेड़ इतने कम होंगे कि कोई बच्चा उन्हें लिख सके।” अश्शूर को इस विशाल जंगल के रूप में चित्रित किया गया है जो नष्ट होने वाला है। अश्शूर पर न्याय आएगा।

यशायाह 10:20-23 श्लोक 20-23 में अवशेष रिटर्न, इज़राइल हमेशा ऐसी अविश्वसनीय विदेशी शक्ति पर निर्भर नहीं रहेगा, बल्कि प्रभु पर निर्भर रहेगा। और यद्यपि परमेश्वर न्याय लाने जा रहा है, और यहाँ तक कि अश्शूर के हाथ से भी, एक अवशेष वापस आएगा और परमेश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करेगा। वह श्लोक 20-23 में है। "और उस समय ऐसा होगा कि इस्राएल के बचे हुए लोग, और जो याकूब के घराने से बच निकले हैं, वे फिर अपने मारनेवाले पर भरोसा न करेंगे।" वे किसी प्रकार की विदेशी शक्ति पर भरोसा नहीं करेंगे, “वे फिर उस पर भरोसा न रखेंगे जिसने उन्हें मारा, परन्तु सच्चाई में इस्राएल के पवित्र यहोवा पर भरोसा रखेंगे। बचे हुए लोग, यहां तक कि याकूब के बचे हुए लोग, शक्तिशाली परमेश्वर के पास लौट आएंगे। चाहे मेरी प्रजा इस्राएल समुद्र की बालू के समान हो, तौभी उन में से कुछ लोग लौट आएंगे; पूरा अंत धार्मिकता से भर जाएगा। क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर यहोवा सारी भूमि का अन्त कर देगा, अर्थात् उसका अन्त कर डालेगा।”

यशायाह 10:24-27 - यहूदा को अश्शूर द्वारा नहीं जीता जाएगा और फिर श्लोक 24-27, गंभीर धमकियों के बावजूद, भगवान अश्शूर को यहूदा को जीतने की अनुमति नहीं देगा, बल्कि यहूदा को उससे बचाएगा। आप 24 में पढ़ते हैं, “इस कारण सेनाओं का

परमेश्वर यहोवा यों कहता है, हे सिय्योन में रहनेवालो मेरी प्रजा, अश्शूर से मत डरो; वह तुम्हें छड़ी से मारेगा, और उसी रीति के अनुसार तुम्हारे विरुद्ध अपनी लाठी उठाएगा। मिस्र का. अब थोड़े ही समय में उनका जलजलाहट शान्त हो जाएगी, और मेरा क्रोध उनके नाश में समा जाएगा।"-अर्थात, अश्शूर का विनाश -' ' 'और सेनाओं का यहोवा उस पर मिद्यानियों के वध के समान विपत्ति उत्पन्न करेगा।" ओरेब की चट्टान '।" (ओरेब में मिद्यान की पिटाई , वह एक चट्टान थी जहां मिद्यान के राजकुमार जो युद्ध से भाग गए थे, गिदोन द्वारा न्यायियों 7:25 में मारे गए थे।) तो, "सेनाओं का प्रभु उसके लिए एक विपत्ति उत्पन्न करेगा।" ओरेब की चट्टान पर मिद्यान का वध ; और जैसे उसकी लाठी समुद्र पर थी, वैसे ही वह उसे मिस्र की रीति के अनुसार उठाएगा।" दूसरे शब्दों में, जैसे प्रभु ने इस्राएल को लाल सागर के पार से बचाया, वैसे ही वह उन्हें अश्शूरियों से भी छुड़ाने जा रहा है। "और उस समय ऐसा होगा कि उसका बोझ तेरे कन्धे पर से और उसका जूआ तेरी गर्दन पर से उतार दिया जाएगा, और अभिषेक के कारण जूआ नाश हो जाएगा।" इसलिए गंभीर खतरों के बावजूद, परमेश्वर यहूदा को चमत्कारी तरीके से बचाएगा। और, निःसंदेह, आप हिजकिय्याह के समय में फिर से उसकी पूर्ति पाते हैं जब वही चीज़ घटित होती है।

यशायाह 10:28-32 - यरूशलेम में बंद हो रहा है लेकिन भगवान हस्तक्षेप करता है अध्याय 10 , छंद 28-32, यहाँ जो कहा गया है उसे दोहराता है। सबसे पहले, आपके पास एक शहर से दूसरे शहर की ओर बढ़ती हुई असीरियन सेना के आने की तस्वीर है। यह श्लोक 32 में चरमोत्कर्ष पर पहुँचता है। आप 28 में देखते हैं, "वह ऐयाथ में आ गया है , वह माइग्रोन में चला गया है ; उसने अपना सामान मिकमाश में रख दिया है। वे मार्ग पार कर चुके हैं; उन्होंने गेबा में अपना ठिकाना बना लिया है । रामा डरता है; शाऊल का गिबा भाग गया। हे गल्लीम की बेटी, अपनी आवाज ऊंची करो ; हे गरीब अनातोत , लैश तक इसे सुनाओ । मदमेना को हटा दिया गया है; गेबीम के निवासी भागने के लिये एकत्र होते हैं।" फिर चरमोत्कर्ष आता है. "उस दिन तक वह नोब में ही रहेगा; वह सिय्योन की बेटी के पर्वत, अर्यात् यरूशलेम के पहाड़ पर अपना हाथ बढ़ाएगा।" यह उस सेना का चित्रण है जो

यरूशलेम के चारों ओर आ रही थी, जैसे वह बंद हो रही थी।

लेकिन फिर क्या होने वाला है? भगवान हस्तक्षेप करने जा रहे हैं. "देखो, सेनाओं का यहोवा, टहनियों को भय से काट डालेगा; और जो ऊंचे लोग हैं वे काट दिए जाएंगे, और जो अभिमानवाले हैं वे नीचा किए जाएंगे। और वह घने जंगल को लोहे से काट डालेगा, और लबानोन बड़े बल से नाश हो जाएगा।" बस जब ऐसा प्रतीत होता है कि यरूशलेम को ले लिया जाना है, तो आपके पास भगवान का हस्तक्षेप है। और फिर, आपके सामने जंगल काटे जाने की कल्पना है। "एस हॉल ने आतंक के साथ शाखा काट दी; जंगल के घने जंगल को लोहे से काट डालेगा, और लबानोन"—जंगल के लिए एक आकृति— " एक बल से गिर जाएगा।"

यशायाह 10 का सारांश इसलिए, यह अध्याय 10, श्लोक 5 से शुरू होकर, हमलों के महत्व, असीरियन साम्राज्य के उदय और उसकी सफलता, और यहूदा के लिए इसके खतरे की एक तस्वीर देता है। असीरिया ईश्वर के हाथ में एक उपकरण था, भले ही असीरिया ने खुद को उस उपकरण के रूप में नहीं पहचाना। और, इसलिए, उसका स्वयं ही न्याय किया जाएगा। आप जो पाते हैं वह सब इतिहास में अक्षरशः पूरा हुआ है। अश्शूर यहूदा में आया; यह यरूशलेम तक आया; भगवान ने हस्तक्षेप किया और यरूशलेम को बचाया। और फिर, छोटे भविष्यवक्ता नहूम की पुस्तक में सौ साल बाद, 612 ईसा पूर्व में, नीनवे के विनाश का वर्णन किया गया है। अश्शूर की राजधानी नीनवे स्वयं नष्ट हो गई और वह फिर कभी एक राष्ट्र के रूप में उभर नहीं पाई। तो, आपके पास वहां एक उल्लेखनीय अध्याय है, जहां तक धार्मिक अवधारणा और ऐतिहासिक स्थिति दोनों का संबंध है, जिससे यह स्वयं को संबोधित करता है।

यह सिद्धांत सर्वत्र, असीरिया पर लागू होता है लेकिन यह हम पर भी लागू होता है। प्रभु हमें कुछ करने के लिए उपयोग कर सकते हैं और फिर भी हम यह सोच सकते हैं कि हम ही हैं जो इसे अपनी महान क्षमताओं से कर रहे हैं या जो कुछ भी निर्णायक रहा है वह प्रभु को श्रेय दिए बिना। और हम उस कुल्हाड़ी की तरह हो सकते हैं जो मालिक के खिलाफ

अपनी शेखी बघारती है।

यह वास्तव में आश्चर्यजनक है, है ना, जिस तरह से समानांतर इतना मजबूत लगता है। ठीक है, आइए यहीं रुकें और अगले घंटे अध्याय 11 पर चलें। अध्याय 11 उन प्रमुख युगांतशास्त्रीय अनुच्छेदों में से एक है।

कैरिस सॉयर द्वारा लिखित, 2009, गॉर्डन कॉलेज
कार्ली गीमन
द्वारा प्रारंभिक संपादन टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादन
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया